ॐ

कलौतु केवला भक्तिः ।

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा, रेवाड़ी

का

संक्षिप्त इतिहास

मुद्रकः—

समानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी ।

सं० १९८७

साधारण नियम ।

१–मनुष्य का पहिला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उन की सेवा करे ।

२–उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे ।

३–एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे ।

४–साधु सज्जन का सत्संग करे ।

५–विषयों के आधीन न हो ।

६–शत्रुओं को मित्र बनावे ।

७–अधिक उपाधि न बढ़ावे ।

८–निरन्तर सारासार का विचार करता रहे ।

९–भूत मात्र पर दया रक्खे ।

१०–अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उनपर दृढ़ आस्था रक्खे ।

❀ ओ३म् ❀

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम

का

संक्षिप्त इतिहास।

आज कल के नवीन विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों के समय में उन आदमियों का जिन को केवल शिक्षा ही से प्रेम नहीं है, बल्कि जो समस्त राष्ट्र को उठाना चाहते हैं एक वार भगवद्भक्ति आश्रम में आना बहुत लाभ दायक होगा। यह आश्रम दिल्ली से ५० मील की दूरी पर बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे के रेवाड़ी जंक्शन से पश्चिम की ओर, और नारनौल लाइन के पास ही दक्षिण की ओर रामपुरा ग्राम के जंगल में स्थापित है।

रेवाड़ी या रेवतपुर राजा रेवत की लड़की के नाम पर रक्खा गया है। रेवती भगवान् कृष्ण के बड़े भाई बलराम जी से ब्याही गई थी इस कस्बे में जो कि बहुत प्राचीन और पवित्र है एक आश्रम भगवद्भक्ति के विकाश

के लिए खोला गया है। जिस का नाम भगवद्भक्ति आश्रम है।

परमात्मा की दया से आश्रम को अपने इच्छित आदर्श की सिद्धि के लिए बहुत अच्छा स्थान मिलगया है। रामपुरा के राव, राव बहादुर कप्तान राव बलबीर सिंह जी ओ० बी० ई० ने जो की एक बीर और विख्यात राजकुल से हैं लगभग १००० बीघा भूमि आश्रम के नाम रजिष्टरी करदी है। कोई दश वर्ष हुए जब यह आश्रम इस अत्यन्त स्वास्थ्यप्रद और रमणीक जगह में स्थापित किया गया था और प्रतिदिन जङ्गल को बाग् के रूप में परिणित किया जा रहा है। इस के ठीक मध्य में एक विस्तृत और विशाल पक्का तालाब जो 'रामसर' नाम से प्रसिद्ध है बन गया है। इस के चारों तरफ मन्दिर, मकान वृक्ष और फूलों के पौदे लगे हुए हैं। आश्रम में आनेवाला प्रत्येक दर्शक तुरन्त यह स्वीकार करेगा कि निस्सन्देह यह स्थान पुण्यात्मा और पवित्र हृदय लोगों के रहने योग्य है। इस के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं।

आश्रम के उद्देश्य।

१. श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना।

२. गोरक्षा और उस के लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना।

४. शिक्षा का प्रचार करना जिस में मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना।

५. बीमारियों के अवसर पर दवाई बाँटना।

६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना।

आश्रम की सीमा में प्रत्येक जाति के सब लड़के और लड़कियों को तथा उन जातियों के बालकों को भी जो अछूत समझे जाते हैं सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है जिस से उन की शारीरिक और मानसिक उन्नति हो। यह आश्रम निम्न विभागों में विभक्त है।

विभाग

ब्रह्मचर्य विभाग।

(१) प्रथम तो यहां ब्रह्मचर्य विभाग है जिस में प्रत्येक जाति के बालक प्रविष्ट किए जाते हैं। विद्यार्थियों को कम से कम ५ वर्ष लगातार आश्रम में रहना पड़ता है। इस आश्रम में ८ वर्ष से अधिक आयु के लड़के लिए जाते हैं। वे बड़ा सादा और परिश्रम का जीवन व्यतीत करते हैं, एक लंगोट मात्र बांध कर रहते हैं। सब्जत शारीरिक व्यायाम व आश्रम की सेवा करते हैं उन को संस्कृत, हिन्दी, और अंगरेजी में शिक्षा दी जाती है। एक योग्य और विद्वान् पण्डित संस्कृत के सब आवश्यक विषय अर्थात् व्याकरण वेद और गीतादि पढ़ाते हैं। गरीब लड़के आश्रम के खर्च पर रक्खे जाते हैं परन्तु जिन के माता पिता खर्च दे सकते हैं उन से भोजन, वस्त्र, पुस्तक इत्यादि सब के लिए सात रुपये मासिक लिया जाता है। शिक्षा प्रत्येक को निःशुल्क दी जाती है। जो लड़के पांच वर्ष के पश्चात् भी रहना चाहें उन के रहने की आज्ञा है, हां उनको ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ववत् ही पालन करना पड़ेगा।

कन्या पाठशाला ।

(२) दूसरी कन्या पाठशाला है, इस में लड़कियों को श्रेणी बद्ध शिक्षा (दीक्षा दी जाती है और ब्रह्मचारियों की भांति ये भी ब्रह्मचर्य-व्रत पूर्वक रहती हैं। इन की शारीरिक, मानसिक और सच्चरित्र की उन्नति के लिए इनको सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है और किसी विषय के पढ़ाने में इन के स्त्री जाति होने के कारण कोई रुकावट नहीं है, परन्तु यह आवश्यक बात है कि जो विषय उन को पढ़ाया जावे उसके द्वारा स्त्री जाति का चरित्र ठीक हो और उन की मानसिक इन्नति हो उनको प्रयाग महिला विद्यापीठ तथा पञ्जाब यूनीवर्सिटी की हिन्दी की सब परीक्षायें भी दिलाई जाती हैं। इन परीक्षाओं का केन्द्र भी आश्रम में ही है। लड़कियां बहुधा अपनी माताओं या कुटुम्ब की दूसरी बड़ी स्त्रियों के साथ रहती हैं और कोई परदा नहीं रखती हैं। सब को ऐसी शिक्षा दी जाती है जिस से वे भारतवर्ष के आदर्श और पवित्र स्त्री चरित्र को क़ायम रक्खें। प्रत्येक लड़की से जो अपना खर्च दे सकती है सात रुपया मासिक लिया जाता है परन्तु जो ग़रीब हैं उन को सब खर्च आश्रम से मिलता है।

महिलामण्डल

(३) यहाँ पर एक महिला मण्डल (विधवा आश्रम) खोला गया है यह महिला मण्डल कमेटी बम्बई की तरफसे है दानवीर वैश्य कुलभूषण श्रीमान् सेठ जमनालाल जी बजाज इस कमेटी के प्रधान हैं। उन की ही प्रेरणा से कमेटी ने मकान बनाने के लिए रुपया दिया है और महिला मण्डल कमेटी बम्बई की शाखा यहां पर खोली है। इस समय १५ विधवाओं के रहने का मण्डल की ओर से प्रबंध है इससे अधिक बहिनें अपने खर्च पर रह सकेंगी। इनकी शिक्षा का प्रबन्ध मण्डल की तरफ से है।

(४) एक पाठशाला दलित जातियों के बालकों के लिये है, इसमें इन जातियों के बालकों को चौथे दर्जे तक मुफ्त शिक्षा दीजाती है। साधारण शिक्षा के अतिरिक्त जो सर्कारी सहायता प्राप्त स्कूलों में दी जाती है इन को प्रार्थना के मंत्र, गीता और महात्माओं के शब्द, भजन दोहे भी सिखाए जाते हैं। इन बालकों को हर प्रकार की सामाजिक स्वतंत्रता है। वे ब्रह्मचारियों के साथ यदा तदा काम भी करते हैं, और तालाब में स्नान करते हैं जब कोई आश्रम का हितैषी या दर्शक आता है और भण्डारा देता

है तो इन सब को भोजन कराया जाता है।

औषधालय।

(५) यहां एक छोटासा औषधालय भी है। इसमें एक वैद्य नियुक्त है। सब को मुफ्त दवाऐं दी जाती हैं। निकटवर्ती ग्रामों के लोग इस से बहुत लाभ उठाते हैं।

गोशाला।

आश्रम में एक गोशाला भी है। इसमें आदर्श प्रणाली पर काम होता है। ब्रह्मचारी स्वयं अपने हाथों से गौवों की सेवा करते हैं उनके रहने का स्थान बहुत साफ़ रक्खा जाता है। गौओं को दुधार बनाने और उनकी नसल को सुधारने में विशेष ध्यान दिया जाता है। यहां की गो परिपालन विधि आदर्श है। गोशाला से मिलती हुई गोचर भूमि छोड़ी गई है। गौओं को दुधार और उत्तम नसल की बनाने का यहां पूरा प्रयत्न किया जाता है।

गौओं के अतिरिक्त यहां पर हरिण और हरिणियों की डार चरती दिखाई देती है। यह गरीब जानवर यहाँ चले आते हैं। यहां इन का जीवन सर्वथा सुरक्षित है, कारण आश्रम का नियम है और जिस को आस पास के सब आदमी जानते हैं कि आश्रम की भूमि में

और उस के निकट, किसी ग़रीब प्राणी की हिंसा नहीं की जाती है। बहुत से मोर अभय होकर यहाँ आनन्द से विचरते रहते हैं। छोटे २ पक्षी तोते, चिड़िया, बुलबुल, तीतर इत्यादि बहु संख्या में रहते हैं। परमात्मा की मूक सृष्टि भी आश्रम के पवित्र और लाभदायक जीवन का अभिवादन करने लगी है।

पुस्तकालय।

(६) यहां एक छोटा सा पुस्तकालय है जिस में धार्मिक ग्रन्थों की अधिक संख्या है।

प्रेस और प्रकाशन

(७) आश्रम का अपना "भक्ति" प्रेस है। इस से विविध धार्मिक ग्रंथ छप कर प्रकाशित होते हैं, विशेषतः वेदान्त, उपनिषद्, गीता, भक्तों की वाणियां और अन्य भक्ति सम्बन्धी साहित्य छपते हैं। यहाँ की छपी पुस्तकों का प्रचार करने के लिए मूल्य अत्यन्त रक्खा जाता है।

आश्रम से 'भक्ति' नाम की एक मासिक पत्रिका भी निकलती है। इस में ज्ञान और वैराग्य आदि के पुट में भक्ति की मीमांसा होती है। अच्छे अच्छे मन

शान्तिदायक लेख निकलते हैं। इस पत्रिका का सम्पादन स्वामी श्री कृष्णानन्दजी सरस्वती बड़ी कुशलता से करते हैं।

अतिथिशाला

(८) इन संस्थाओं के अतिरिक्त एक अतिथिशाला भी है। जिस में आश्रम में आने वाले अतिथियों के लिये सब प्रकार का सुभीता है। यहाँ के रहने वाले प्रत्येक अतिथि को आश्रम के नियमानुसार प्रातः सायं अन्य आश्रम-वासियों के साथ आश्रम की सेवा का कार्य जैसे मिट्टी खोदना, वृक्षों में जल सींचना आदि आवश्यक और अनिवार्य है। सायं प्रातः की प्रार्थना में उपस्थित होना आवश्यक है। सकुटुम्ब आने वाले गृहस्थी अतिथियों को ब्रह्मचर्य से रहने का नियम है, इसलिये स्त्री स्त्रियों में और पुरुष पुरुषों में रक्खे जाते हैं। प्रत्येक अतिथि को एक बार आश्रम से भोजन मिलता है।

आश्रम के प्रबन्ध के लिए एक प्रबन्धकारिणी कमेटी बन गई है जिस के निम्न लिखित सभासद हैं।

१. राव बहादुर कप्तान राव बलवीरसिंह जी रामपुरा प्रधान
२. भक्त नन्द किशोर जी दादरी मंत्री।

३. ला०मथुरा प्रसाद जी दिल्ली।
४. ला० रामजीदास जी अग्रवाल भटिण्डा।
५. श्री शंकरदेव जी भगवद्भक्ति आश्रम।
६. डाक्टर रघुनाथ जी एम० बी० बी० एस० दिल्ली।
७. ला० गनपतराय बी० ए० तहसीलदार।
८. स्वा० कृष्णानन्द जी सरस्वती भगवद्भक्ति आश्रम।
९. श्री भूमानन्द ब्रह्मचारी भ० भ० आश्रम।
१०. पं० जगन्नाथ जी रेवाड़ी।
११. राव श्रीराम नागल (रेवाड़ी)
१२. ला० तनसुख राय भिवानी।
१३. ला० किशनलाल जींद।
१४. चौ० रामलाल भाड़ावास (रेवाड़ी)
१५. बा० जयदयाल भार्गव वकील कानपुर।
१६. ला० प्रेमलाल बैरिस्टर लाहौर।
१७. पं० मुरारीलाल जीन्द।

आश्रम के सम्बन्ध

में

लोकमत ।

बा० स्वयम्भरदास बी० ए०, बी० ई० डी०
इन्सपेक्टर शिक्षा विभाग पटना ।

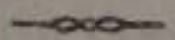

मैं अपने दो अन्य मित्रों के साथ इस आश्रम में तीन दिन रहा। मेरा विश्वास है कि यह आश्रम ऐसी संस्था है जिसमें भविष्य में बहुत कुछ होनेकी सम्भावना है प्राचीन हिन्दू ब्रह्मचर्य्य प्रणाली पर मुफ्त शिक्षा दी जाती है। जब आश्रम सब प्रकार से सम्पूर्ण हो जावेगा तो वास्तव में निस्सन्देह प्राचीन हिन्दु संस्थाओं के सदृश होजावेगा जिनमें ऋषि अध्यापक होते थे और उच्च वर्ण के लड़के सब प्रकार के सामाजिक बन्धनों से मुक्त होकर एक साथ रहते थे और उन सब विषयों में शिक्षा ग्रहण करते थे जो उस समय प्रचलित थे जैसे साहित्य फिलासिफी और

विज्ञान। परन्तु यह संस्था प्राचीन हिन्दुओं के उत्तम काल के उदाहरण से भी आगे बढ़ी हुई मालुम होती है। जहां तक मुझे ज्ञान है कोई संस्था अछूतों को प्रविष्ट नहीं करती थी बल्कि शूद्रों को भी ऐसी पावत्र सस्थाओं में स्थान नहीं मिलता था। इस प्रकार का कोई लेख नहीं है जिससे यह पता लग सके कि चमारों को वेदों की ऋचाओं के उच्चारण करने की आज्ञा थी। परन्तु श्री स्वामी जी महाराज के सच्चे और हार्दिक प्रेम के कारण जो वे मनुष्य मात्र के साथ रखते हैं चमारों के लड़के गीता और अन्य धार्मिक पुस्तकों के मंत्र उच्चारण करते सुनाई देते हैं। उनको यहाँ पर उनका व्यवसाय भी सिखाया जाता है। यहांपर अछूतपन का प्रश्न व्यवहारिक रूप में हल किया जारहा है।

उत्तम धार्मिक शिक्षा इस संस्था की आश्चर्य जनक विशेषता है। मेरे लिए जो इस बात से खूब परिचित है जो कि साधारण स्कूलों में होता है और जहां मैंने अपने जीवन के २८ वर्ष बतौर अध्यापक व इन्स्पेक्टरके व्यतीत किए हैं यह बात अपील करती है कि केवल यही एक ढंग है जिसके द्वारा लड़के धार्मिक बन सकते हैं। मुझे यह कहने में कुछ भी संकोच नहीं है कि भारतीय देशभक्त को ऐसे आश्रम बनाने और उनकी संख्या बढ़ाने की

तरफ ध्यान देना चाहिए।

जो काम और उद्देश ऐसे उच्च महात्मा के लक्ष्य में है उस से प्रभावित होकर मैं बड़ी नम्रता से इस समय एक वर्ष के लिए दश रुपये मासिक सहायता पेश करता हूं।

अन्त में मुझे आशा है कि आने वाली सन्तानें राय बहादुर लेफ्टिनेन्ट बलवीर सिंह को उन सेवाओं के लिए जो इन्होंने निकटवर्ति इलाके के लिए और देश की शिक्षा के लिए की है अत्यन्त प्रेम और कृतज्ञता से याद रक्खेंगी। निष्काम-कर्म योगी महात्माओं के ज़िकर करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे भगवान् के सेवक हैं और उन्होंने अपने को ग़रीबों के उद्धार और मनुष्य मात्र की सेवा में कर रक्खा है।

स्वयम्भरदास

राइट ओनरेबिल रायबहादुर सर शादी लाल जी, के. सी. एस. आई. चीफ़ जस्टिस पंजाब हाई कोर्ट।

१९२३ में मैंने भगवद्भक्ति आश्रम को देखा जिसके राय बहादुर बलवीर सिंह संस्थापक और चलाने वाले

प्रतिभा शाली पुरुष हैं। उन्होंने आश्रम को बहुत ज़मीन दी है और इसको सफल बनाने के लिए बहुत समय खर्च करते हैं। मैं उस स्कूल का खास तौर पर जिकर करना पसन्द करता हूं जो कि राव साहब ने दलित जातियों के बालकों के लिए बनवाया है, इस में बहुत अच्छा काम होरहा है विशेष कर ऐसे प्रान्त में जो शिक्षा में और सार्वजनिक कामों में पिछड़ा हुवा है।

राव बहादुर बलवीरसिंह आश्रम की भिन्न २ संस्थाओं के कामों में इस तरह भाग लेते हैं जैसे घर के काम में। इनका प्रयत्न ऐसा है जिसके लिए हर प्रकार का उत्साह और सहायता उचित है। मैंने एक छोटी सी रकम ५००) रुपये आश्रम की सहायता के लिये दिए हैं।

शादीलाल

चौधरी बदनसिंह एम. एल. सी. बदाऊं संयुक्त प्रान्त॥

इस संस्था के बारे में उत्तम विचार ले कर मैं कल आश्रम से जारहा हूं। यदि ऐसी संस्थाएं विशेष संख्या में स्थापित करदी जावें तो निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा, स्त्री

शिक्षा और दलितोद्धार का प्रश्न बड़ी आसानी से हल हो सकता है। इस ग़रीब देश के लिये ऐसी ही संस्थाओं की आवश्यकता है। यहां ब्रह्मचारियों को बिना कुछ लिए शिक्षा दी जाती है और इनकी शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष ध्यान दिया जाता है। श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज, राव बहादुर लेफ्टिनेन्ट बलवीर सिंह ओ. बी. ई. महात्मा दिलीप बनस्थी और अन्य महात्मागण बहुत धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस आश्रम की उन्नति के लिए प्रयत्न करने में कोई बात बाकी नहीं छोड़ी है। यहां पर ब्रह्मचारियों को यह सिखाया जाता है कि बिना सर्कारी या निजी नौकरी में प्रवेश किये किस प्रकार अपनी रोजी कमा सकते हैं और किस तरह अपने खर्च और आवश्यकताओं को कम कर सकते हैं।

अन्त में मैं फिर आश्रम के कार्य कर्ताओं के उत्साह, अनथक परिश्रम, आत्म विश्वास और परमात्मा में पूर्ण विश्वास की प्रशंसा करता हूं। मैं इस संस्था की विशेष उन्नति देख कर बहुत प्रसन्न हूंगा मैं इस संस्था की सभी प्रकार से उन्नति चाहता हूं।

बदनसिंह

टी. जी. परसीवल सिपीयर एल. ए. प्रोफेसर मिशन कालिज दिल्ली

भगवद्भक्ति आश्रम एक अत्यन्त मनोहर स्थान मालूम होता है यह शिक्षा धर्म और भारतीय जीवन के लिये बड़ा काम कर रहा हैं। यहाँ के विद्यार्थियों की प्रसन्नता और अध्यापकों का उन्साह इस की भविष्य की उन्नति के लिये शुभ लक्षण है।

परमात्मा के प्यारे और देवताओं के समान मनुष्यों का ऐसा ही जीवन होना चाहिए। सब प्रकार के सांसारिक बन्धनों से मुक्त एकान्त वासियों का उस एक समीपता के लिए प्रयत्न।

ट० जी० परसीवल सिपीयर।

राय साहब चौधरी छोटू राम वज़ीर ॥ कृषि विभाग पंजाब ॥

आज आश्रम को देखा। परिस्थिति मनोहर और प्रभावोत्पादक है। बालक और बालिकाओं को उन सब विषयों की शिक्षा दी जाती है जो जीवन के लिए आवश्यक हैं। संस्था की विशेशतायें यह हैं (१) सादा जीवन

(२) सब प्रकार के अछूतपन का अभाव (३) हाथ से काम करने का महत्व (४) भक्ति भाव ।

यह संस्था अपने ढंगका अनुपम तजरबा है और इस की सफलता से आस पासके इलाके को बड़ा लाभ होगा।

छोटूराम

बी. जी. भट्टाचार्य एम. ए., एल. एल. बी, न्यावर।

भगवद्भक्ति आश्रम एक आदर्श संस्था है और बहुत उत्तम व लाभदायक कार्य कर रही है। शिक्षा और दलितोद्धार इस की विशेषतायें हैं। लड़कों को ऐसी शिक्षा दी जाती है जिस से वे पवित्र सच्चे और काम करने वाले बनें।

भट्टाचार्य

श्री स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती।

आज मैं इस भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा में रहा, सब ब्रह्मचारियों का पठन पाठन, रहन सहन, विधि आदि नियमों को देख कर परम प्रसन्न हुवा। यहां के व्यवस्थापक स्वामीजी व पंडितजी जो आश्रम में बड़े प्रेम से

देश और जाति सेवा कर रहे हैं वह अत्यंत प्रशंसनीय है परमात्मा ऐसे आश्रमों की हरएक प्रांत और सब नगरों में स्थापना करे जिससे हमारे देश और जातिका सुधार हो

अच्युतानन्द सरस्वती

करनल विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह
चीफ़सेक्रेटरी बनारस स्टेट

मैंने सौभाग्यवश एक रात इस आश्रम में वास किया। मुझे जो शाँति इस आश्रम से प्राप्त हुई उसका वर्णन मेरी सामर्थ्य से बाहर है। राव बलवीरसिंह की भगवद्भक्ति और सज्जनता और परम उदारता से यह आश्रम स्थापित हुवा है और इसमें जैसा शुभ कार्य हो रहा है वह सब जनों को विदित है। ऐसा उत्तम कार्य बहुत कम लोगों ने किया है। और सब से बड़ी प्रसन्नता की बात यह है कि जो कुछ राव साहब ने किया है सत्य भाव और सत्व गुण से किया है। इस आश्रम में आकर भगवान् की स्मृति अनायास होजाती है। परमेश्वर ऐसे आश्रम और तपोभूमि की नित्य रक्षा करे। मुझे जो सुख इस आश्रम में आकर प्राप्त हुवा है वह अनिर्वचनीय है।

करनल विन्ध्येश्वरी प्रसादसिंह

लेफ्टिनेन्ट एस. आई एच. हलवी रायल आर्टीलेरी १०५ पेक बैटरी

आज राव बहादुर बलवीर सिंह ने बड़ी कृपा करके मुझे सब आश्रम दिखाया। जिस उत्तमता से सब बातों का प्रबन्ध किया गया है उस से मैं बहुत प्रसन्न हुआ। यह विचार ऐसे नियमों के आधार पर मालूम होता है जिसको हम इसाइयों की दान प्रणाली कहते हैं और उस दान को मैं जीवन का सबसे उच्च आदर्श समझता हूं। अब तक बहुत काम बनरहा है परन्तु दो स्कूल एक लड़कों का और दूसरा लड़कियों का अच्छे उन्नति कर रहे हैं। तालाब पूर्ण होने को है मैं इस की सब प्रकार से उन्नति चाहता हूं क्योंकि इस से आस पास के इलाकों को बड़ा लाभ होगा। लोग राव बहादुर बलवीर सिंह के बड़े कृतज्ञ होंगे जिस की शक्ति और रुपये से यह काम चल रहा है। मैंने एक बहुत छोटी रकम सहायता के तौर पर दी है।

एस० आई एच० हलवी

मेजर जे० हेवियस सेडलर रायल आरटीलेरी।

मैं राव साहब बलवीर सिंह के साथ भगवद्भक्ति आश्रम में आया और जिस उत्तम ढंग से यहाँ बालकों को शिक्षा दीजाती है उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। यहां ६२ लड़के बिना फीस के शिक्षा पा रहे हैं और इनको जीवन के बहुत उच्च नियम सिखाये जारहे हैं।

कोई ५०० बीघा ज़मीन लेफ्टिनेन्ट बलवीरसिंह ओ. बी. ई. ने इस आश्रम को दी है और यह भूमि ईश्वर को अर्पण करदी है इसलिये विश्वास है कि सब लोग इस भूमि को पवित्र रखने में सहायक होंगे और इस सीमा में शिकार खेलने और जीव हिंसा करने से परहेज़ करेंगे। यहां पर ऐक बड़ा अच्छा नियम है कि पत्येक दर्शक को ५ टोकरी मिट्टी खोदनी चाहिये और डालनी चाहिये जो मैंने भी डाली हैं। मैंने ५०) रुपये दिये हैं। १५) तालाब १५) स्त्रीशिक्षा १०) साधारण शिक्षा १०) दलितों की शिक्षा के लिये।

जे० हेवियस सेडलर

मेजर सी. एम. मौल्टवी ६५ रसल्ज़ इन्फेंटरी और लेफ्टिनेन्ट डब्ल्यू. वी. फेरर ६५ रसल्ज इन्फेंटरी मऊ.

आज हमने रावसाहब लेफ्टिनेन्ट राव बलवीरसिंह के साथ आश्रम को देखा। जब हम वहां थे तो हमने बहुत से बालकों को ईश्वरीय नियम के अनुसार मौलिक रूप से शिक्षा पाते देखा इनको यह सिखाया जाता था कि संसार में भलाई करना लाभ दायक है।

इस समय आश्रम तयारी की अवस्था में है। तालाब बनाया जा रहा है, मकान चिने जा रहे हैं। आशा है कि आगामी कुछ वर्षों में यह बहुत मनोहर स्थान हो जावेगा। जहाँ पर धार्मिक विद्यार्थी एक बहुत ही सुख दायक और शांतिपूर्ण परिस्थिति में अपनी विद्या का अनुशीलन कर सकेंगे।

इनके हां एक बड़ा उत्तम नियम है कि जो यहां दर्शक रूप में आता है उससे कहा जाता है कि कम से कम ५ टोकरी मिट्टी तालाब से अवश्य निकालनी चाहिये। यह ऐसा नियम है जिसका सबको पालन करना चाहिये।

आश्रम की सीमा में जीव हिंसा नहीं की जाती है, इसलिये आश्रम की अवधि में और उसके आस पास किसी को शिकार नहीं खेलना चाहिये।

यह आश्रम राव बहादुर बलवीर सिंह ओ०बी० ई० ने जारी किया है और उन्होंने ही इसकी रक्षा की है। इन्होंने ही समस्त भूमि दी है और मकानों में बहुत रुपया खर्च किया है और हमको आशा है कि राव साहब के प्रयत्न के मुताबिक ही सफलता प्राप्त होगी।

दूसरी बहुत ही उत्तम व श्रेष्ठ संस्था दलित जातियों के लड़कों को शिक्षा देने की है। इस शिक्षा से उनके विचार अवश्यमेव उच्च होंगे और उनके कार व बार में भी यह लाभदायक होगी।

सी० एम० मोल्टबी०
डब्ल्यू० बी० फेरर०

कप्तान एच. बुलक ६५ रसल्ज इन्फेंट्री बनारस।

मैंने आज राव बहादुर बलवीरसिंह के साथ आश्रम को देखा। मैं गत वर्ष जब रामपुरा आया तब नहीं देख सका था तालाब के बनाने, वृक्षों के लगाने और लड़क

को शिक्षा देने के काम को देखकर मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मुझे आशा है यहां आस पास कोई शिकार नहीं खेलेगा।

मैंने पण्डित दिलीपसिंह को ५०) रुपये दिये हैं जो शिक्षामें या और किसी काममें जिसे वे ठीक समझें खर्च किये जावें। मैं तालाब से पाँच टोकरी मिट्टी निकालता हूं जो सबको निकालनी चाहिये॥

एच. वुलक

राय बहादुर ला० आत्माराम इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्ज़ अम्बाला डिवीज़न।

राव बहादुर बलवीरसिंह ने मुझको २५-२-२७ को भगवद्भक्ति आश्रम का निरीक्षण करने के लिये कृपा पूर्वक निमन्त्रित किया। जो कुछ मैंने आश्रम के विषयों में देखा उससे मुझ पर बड़ा असर पड़ा। वास्तव में तो यहाँ पर बहुत कुछ देखने को था, पर देखने योग्य सब वस्तुओं को दुर्भाग्यवश नहीं देख सका इसका मुझे दुःख रहा। अछूत पाठशाला के विद्यार्थी होशियार और बुद्धिशाली देख पड़ते थे। प्रत्यक्षरीतेन जो शिक्षा उनको दी जारही है उससे वह बहुत लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

दुर्भाग्य वश ब्रह्मचारियों की शिक्षा के विषय में कुछ जानने का अवसर मुझ को नहीं मिला।

लड़कियों के विभाग ने तो मुझे मुग्ध कर दिया। लड़कियों की शिक्षा तो वास्तव में सुन्दर शिक्षण-पद्धति के अनुसार हो रही है। दरअसल में इस सम्बन्ध में मैंने जो कुछ देखा उससे मुझको बड़ा आनन्द हुवा।

आत्माराम

मियां लालसिंह स्थानापन्न डिप्टी कमिश्नर जि० गुड़गांवा।

राव बहादुर बलवीर सिंह जी ओ. बी. ई. रईस रामपुरा की कृपा से मैंने इस आश्रम का निरीक्षण किया। जो कुछ मैंने वहां देखा उससे बड़ा आनन्द हुवा। कन्या-पाठशाला तथा अछूत पाठशाला को सरकार से सहायता प्राप्त होती है। सबसे अधिक जिस वस्तु ने मेरा ध्यान आकर्षित किया है वह है आदर्श गोशाला है। इस गोशाला में प्रत्येक गौवें उत्तम नसल की हैं। मेरी समझ में यदि सर्वत्र ऐसी ही गोशालाएं स्थापित हो जावें तो जीव रक्षा का प्रश्न आपही हल हो जाय। मेरी कामना है कि यह संस्था उन्नति को प्राप्त होवे।

लालसिंह

पं० गौरीशंकर जी भार्गव रईस
अजमेर

"प्रत्येक अतिथि इस गोशाला की स्वच्छता तथा गो पालन की परवर्तित रीति को जिसके अनुसार यहां पर गायें रक्खी जाती हैं देख कर उसकी वर्तमान प्रारम्भिक अवस्था होते हुये भी मोहित हुए बिना नहीं रह सकता"।

"प्रत्येक भारतीय को विशेष कर प्रत्येक हिन्दू को इस विषय में आश्रम से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये"।

गौरीशंकर भार्गव

भाई मगनलाल खुशाल चन्द गान्धी
व्यवस्थापक सत्याग्रहाश्रम
साबरमती।

मैंने यहां देखा कि गौ का पालन नहीं किन्तु पूजा होती है। फूलों से पूजा करना यह पूजा का एक ढंग है। उसमें जड़ता भी हो सकती है यह पूजा जो मैंने देखी सो चैतन्यमय है, और गोशाला को गौमाता का

पवित्र मन्दिर की तौर से स्वच्छ और पवित्र रक्खा जाता है। वत्सों को देख कर चित्त तृप्त होता है।

मगनलाल खुशालचन्द गान्धी

हरिभाऊ उपाध्याय भूतपूर्व सम्पादक हिन्दी नवजीवन वर्तमान सम्पादक त्याग भूमि अजमेर।

गो रक्षा और गो-पालन हिन्दू-जीवन का खास अंग होगया है। इस आश्रम में यह प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। गोरक्षा के दो अंग मुख्य हैं-(१) गो का लालन पालन और उत्तम सन्तति तथा (२) आदर्श दूध शाला। इन दोनों दशाओं में यह आश्रम गोरक्षा का वस्तु पाठ दे रहा है। गोशाला की सफ़ाई तथा व्यवस्थापकों की गो भक्ति देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है। गायें बाजी बाजी तो १३, १४ सेर तक दूध देती हैं और प्रायः हृष्ट पुष्ट हैं। जो लोग बूढ़ी गायों को किसी तरह पिंजरापोलों में बांध कर गोशाला या गोपालन करने का सन्तोष मान रहे हैं उन्हें इस गोपालन और गोशाला से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये और

ऐसी संस्थाओं और शालाओं को प्रोत्साहन देना चाहिये।

हरिभाऊ उपाध्याय

श्रीमती मीरा बहिन सत्याग्रहाश्रम साबरमती।

भगवद्भक्ति आश्रम में प्रवेश करना मानो प्रेम और शांति के साम्राज्य में प्रवेश करना है। लगाये हुए वृक्ष तथा फूल हरे भरे खेत, कूजती हुई चिड़ियें, जंगली जानवर (जो अब जंगली नहीं हैं) सभी मानो सर्व व्यापी प्रेम रूपी ईश्वर का बखान करते हैं। यहां पुस्तकें और धार्मिक शिक्षा के साथ ही साथ शारीरिक परिश्रम और सादे जीवन की भी शिक्षा दी जाती है हर एक व्यक्ति अपना काम अपने ही हाथ से करता है। वाटिका और गोशाला भी आश्रम वासियों द्वारा बड़े प्रेम से संचालित होती हैं। इस तरह प्रत्येक वस्तु स्वच्छ और प्रेमांकित दिखाई देती है।

गोशाला को देख कर तो मुझे और ही आनन्द हुवा। गोशाला की पवित्रता और स्वच्छता आदर्श रूप है। सीधी गायें और उनके स्वच्छ बछड़ों का दृश्य बड़ा

आनन्द दायक है।

दूसरे अन्त्यज बालकों की पाठशाला आश्रमका बड़ाही सुन्दर कार्य है।

मीरां

राय बहादुर दिवान ज्ञान नाथजी ऐडमिनि-स्ट्रेटर नाभा स्टेट।

बाबल से वापिस लौटते समय मेरे मित्र राय बहादुर कैप्टेन बलवीर सिंह ओ. बी. ई., एम एल. सी. की कृपा से मुझ उनका आतिथ्य तथा भगवद्भक्ति आश्रम के देखने का सौभाग्य मिला जिसके कि वे निर्माता तथा पथप्रदर्शक हैं। इन सब से बढ़ कर मुझे श्रीस्वामी जी के दर्शनों का और उनके चरणों में कुछ आनन्द के घंटे गुज़ारने का तथा मनुष्य जाति की भलाई, सत्य, भ्रातृप्रेम और स्वावलम्बन पर उनका उपदेश सुनने का सौभाग्य मिला। और उनमें जो संतोष तथा शांति दीखपड़ी उससे तो मैं विशेष करके आश्चर्यान्वित हुआ।

आश्रम में बहुत से विभाग हैं। इसमें एक कन्या-पाठशाला, एक ब्रह्मचर्याश्रम, एक अछूतशाला, महिला

मण्टल तथा एक गोशाला है। जिस रीति से यह सब संस्थाएँ चलाई जाती हैं उसको देखकर मैं बहुत ही प्रभावान्वित हुआ। ब्रह्मचारी तथा दूसरे आश्रमवासी अपना दैनिक कर्म करते हुए कितने प्रसन्न हैं! मैं ख़याल करता हूं कि यह संस्था अछूत जाति के उद्धार के लिये बहुत कार्य कररही है और पसीने की कमाई द्वारा किस तरह पालन किया जाता है यह भी साथ ही साथ प्रत्येक को सिखा रहे हैं। मैं इस संस्थाकी सब प्रकार से उन्नति चाहता हूं। मेरी इच्छा थी कि मैं यहाँ चन्द घंटे ठहरने की अपेक्षा अधिक समय ठहरता।

ज्ञान नाथ

श्रीमान् सी. एन. चन्द्रा आई. सी. एस. डिप्टी कमिश्नर गुड़गावां।

मैं और मेरी स्त्री ने कल आश्रम का निरीक्षण किया, और जो कुछ हमने वहां देखा उससे अति आनन्दित हुए। इस सुन्दर आश्रम में स्त्रियों का विभाग गुड़गावां की इकोनोमी के डोमेस्टिक स्कूल के सिद्धान्त के अनुसार चलता हुआ मालूम देता है। परन्तु यहां संस्कृत पर विशेष जोर दिया जाता है। हमने यहां सबसे अधिक

महत्वपूर्ण जो बात देखी वह है आश्रम की गोशाला में गायों के रखने का बहुत सुन्दर तरीका। यहां की गोशाला में जो गायें रक्खी जाती हैं वह जहां तक हमने देखा है अति उत्तम हैं। हम दोनों इस आश्रम की सफलता चाहते हैं।

सी. एन. चन्द्रा

श्री ला० मोतीलाल लाट तथा ला० बसन्त-लाल मुरारका।

श्रीनन्द किशोर जी की कृपा से आज ता० १०-१०-२९ को हम लोगों को एक रात के लिये श्री भगवद्भक्ति आश्रम में ठहरने का सौभाग्य प्राप्त हुवा··· ··· ··· इस थोड़े से ही निरीक्षण से ही हमारे चित्रों पर आश्रम का बड़ा प्रभाव जमा। वास्तव में आश्रम एक आदर्श संस्था है जहां कि लड़के और लड़कियों को अच्छी शिक्षा प्राप्त हो सकती है। वे अपने तहीं स्वावलम्बी रहते हुवे आदर्श जीवन बिता सकते हैं। बड़ी उमर के स्त्री और पुरुष भी यहां रह कर अपने जीवन के बाकी दिन सार्व जनिक सेवामें लगा सकते हैं। यहाँ के प्रधान अधिष्ठाता श्री स्वामी परमानन्द जी के दर्शन और उपदेश

से तो हम लोग मुग्ध होगये। आपके उपदेश तो मुर्दों में जीवन पैदा करने वाले हैं। भगवान् इस आश्रम को दिन दिन बढ़ावे जिससे हमारे देश को निःस्वार्थ सेवकों की प्राप्ति हो।

१०-१०-२९

मोती लाल लाट

बसन्त लाल मुरारका

महामना श्री पं० मदन मोहन जी मालवीय एम० एल० ए०

मैंने इस आश्रम की प्रशंसा बहुत दिनों से सुन रक्खी थी और बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी कि मैं आश्रम को देखूं। आज आश्रम को देख कर मुझको बड़ा प्रसन्नता हुई। गौवों की सेवा बड़े प्रेम से की जाती है। स्त्रियों और पुरुषों के रहने का, सदाचार और भक्ति पूर्वक जीवन को शान्ति के साथ बिताने का यह एक रमणीय केन्द्र होगया है। विद्यार्थी और विद्यार्थिनीयों को ब्रह्मचर्य के साथ रहकर व्यायाम और शुद्ध आहार, शुद्ध जल और शुद्ध पवन से शरीर और मनको बलवान् बनाने का यहाँ अच्छा प्रबन्ध है। ईश्वर भक्ति के साथ देश भक्ति की पूरी शिक्षा दी जाती है। स्वामीजी ने

मनुष्यों के उपकार के लिये यह एक प्रशंसा के योग्य स्थान बना दिया है। मैं आशा करता हूं कि चिरकाल तक यह आश्रम लोगों को ज्ञान, भक्ति और शारीरिक और आध्यात्मिक बल के देने में सफल होगा।

चैत्र शुक्ल १० सं०१९२७

मदन मोहन मालवीय

आर. ग्राम फोर्ड. एम. वी. एस सुपरिन्टेंडेंट गवर्नमेन्ट फार्म हिसार

मैं ने आज अचानक ही इस आश्रम के फारम को देखा मैंने १८ गायें, जिन में से ६ उत्तम श्रेणी की थीं, और १० बछड़ियां देखीं सब पशुओं की दशा अत्युत्तम थी और चारे पानी का प्रबन्ध सराहनीय था।

मुझे बताया गया है कि दूध का परिमाण रखा जाता है फारम की उन्नति के लिये दुध परिमाण आवश्यक है और यदि उत्तम गायों का दूध परिमाण रखा गया तो शीघ्र ही लाभदायक डेयरी बन जावेगी।

९-२-२७

आर ग्राम फोर्ड,

श्री फ़िरोजखांनून मिनिस्टर आफ लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट पञ्जाब

मुझे आश्रम में ले जाने के लिए मैं अपने मित्र राव बहादुर बलवीर सिंह का बड़ा अनुग्रहीत हूं यह एक अधिक आनन्दमय और शान्तिदायक स्थान है। ईश्वरीय प्रेम की जीवित यादगार रहेगी यही प्रेम महात्मा जी के हृदय में निवास करता है। और महात्मा जी के तप और आत्म-बल से यह संस्था शिक्षा और प्राचीन भाषाओं का एक प्रसिद्ध केन्द्र बनता जारहा है।

गौशाला औरहरिणों के झुण्ड बहुत ही आकर्षणीय हैं इससे अधिक स्वच्छ गौशाला मिलनी दुर्लभ है।

१२-१२-२८ फ़िरोज़खांनून

श्रि ल्यूफ फिच-आक्सफोर्ड इङ्गलैण्ड।

आश्रमके देखने की आज्ञा मिलना एक बड़ा सौभाग्य है भारत वर्ष के लिये एक महान् कार्य किया जा रहा है, जबकि यह देखा जाता है कि हर कार्य जो कि जाति की उन्नति के लिये किया जाता है वह सराहनीय है।

ल्यूफ फिच-आक्स फोर्ड

श्रीयुत ललितचन्द जी साहब, डिप्टी कमिश्नर

आज राव बहादुर कप्तान बलवीर सिंह, ओ० बी० ई० की कृपा से श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुर देखा। इस संस्था में एक विधवा आश्रम, एक कन्या पाठशाला, एक ब्रह्मचारी आश्रम और एक अछूत पाठशाला है। कन्या पाठशाला और अछूत पाठशाला को सरकार से सहायता मिलती है आश्रम एक अति स्वस्थ्य स्थान में बसा है और चारों ओर पूरी शान्ति है मुझे यहां आनेसे बड़ी प्रसन्नता हुई और अवसर मिलने पर पुनः आश्रम को देखने की आशा करता हूं।

मैंने आश्रम की गौशाला को भी देखा। इसमें बहुत सी उत्तम दूध देने वाली गायें और कुछ उत्तम साँड गोवंश की उन्नति के लिये रखे हैं। गौशाला बहुत ही स्वच्छ रखी जाती है।

ललितचन्द

१५ ११ २९

श्रीयुत माइल्स हरविङ्ग, आई. सी. एम. कमिश्नर

आश्रम और वहां पर होने वाले उत्तम कार्य को देख कर मेरी स्त्री को और मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई यह बात

अधिक लाभदायक है कि सब बालक और कन्याओं को अपना कार्य स्वयं करने की शिक्षा दीजाती है और अभ्यास कराया जाता है एक ट्रेन्ड शिक्षक की आवश्यकता है।

२७ ३ ३७ माइल्स हर्डिङ्ग, कमिश्नर।

खान बहादुर खुरशेद मुहम्मद डिप्टी कमिश्नर गुड़गावां

कमिश्नर साहब और उनकी धर्मपत्नी के साथ आश्रम देखने का आनन्द हुआ जो कुछ वहांपर देखा उससे बड़ी प्रसन्नता हुई संस्था की सर्व प्रकार की उन्नति चाहता हूं।

खुरशेद मुहम्मद

कतिपय समाचार पत्रों की सम्मतियाँ।

"जिस पवित्र स्थान की प्रशंसा वीर भूमिके सुयोग्य सम्पादक पं० निरंजन शर्मा अजितके मुखारविन्द से से सुन रक्खी थी आज उस को देख कर बड़ी ही प्रसन्नता हुई"

"हमारा और हमारे साथियों का आश्रम को देख कर जी नहीं भरा"। "आश्रम के कुशलकार्य कर्ताओं

ने आश्रम को प्रसिद्ध करने का ढोंग नहीं रचा है। वे चुपके २ धर्म प्रचार और देश सुधार का कार्य कर रहे हैं। यह उनकी वास्तविक कार्य निष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण है ,, ।

"राय सहाब कु० बलवीर सिंह जी की भी कहां तक प्रशंसा करें, उन्होंने भी अपना अपूर्व त्याग दिखाने में कोई त्रुटि नहीं रहने दी है। आपका एक नव युवक होते हुवे सांसारिक ढोंग परित्याग कर साधुओं की भान्ति आश्रम में वास करना पूर्व जन्म के पुण्यात्मा होने का परिचय देता है" ।

१४ मार्च १९२४ माहेश्वरी ।

"आश्रम के शान्त वातावरण में हमको स्वामी परमानन्द जी की मूर्ति का दर्शन करके अपूर्व आनन्द प्राप्त हुवा। ..... स्वामी जी बड़े अनुभवी, वेदादि शास्त्रों के अच्छे मर्मज्ञ उदार हृदय और आनन्द रूप जान पड़े। ..... बातों ही बातों में वह शास्त्र की गूढ बातें ऐसे सरलता से कह जाते हैं कि मन मुग्ध हो जाता है" ।

"कन्यापाठशाला में कन्याओं को संस्कृत, हिन्दी, गणित गृहशिल्प और कुछ भजन आदि गा लेने की शिक्षा

दी जाती है ,, ..." आश्रम का निरीक्षण करके मुझे बहुत ही हर्ष हुवा। इस प्रकार के आश्रम भारतवर्ष में सर्वत्र खुलने चाहियें। ऐसे आश्रमों में रह कर सादा जीवन व्यतीत करते हुए जो बालक मनुष्यत्व की उच्च शिक्षा प्राप्त करके निकलेंगे वे हिन्दू जाति के और हिन्दू धर्म के रक्षक होंगे। रेवाड़ी से होकर जाने वाले प्रत्येक देश भक्त और शिक्षा प्रेमी से मेरा अनुरोध है कि वह एक ट्रेन छोड़ कर इस भगवद्भक्ति आश्रम का निरीक्षण अवश्य करें। स्वामी परमानन्द जी के दर्शन करके और उपदेश सुन कर उनके मन को निर्मलत और शान्ति प्राप्त होगी।

१ मार्च १९२४ कलकत्ता समाचार

(ले० राम नरेशजी त्रिपाठी)

वैसे तो आजकल कितनी ही पाठशालाएं आश्रम इत्यादि खुल रहे हैं किन्तु रामपुरा के भगवद्भक्ति आश्रम में कई विशेषताएं हैं। यहां राष्ट्रीय शिक्षा के लिये केवल ब्रह्मचर्याश्रम ही नहीं है किन्तु कई पाठशालाएं हैं ... ... यदि ऐसे ही आश्रम जगह जगह पर खोले जांय तो भारत शीघ्र ही उन्नति के शिखर पर पहुंच जाय ..... हमारा देश सेवकों से यही अनुरोध है कि इस स्थान

का एक बार निरीक्षण अवश्य करें और इस शुभ कार्य में योग दें।

१० मई १९२४ भारत मित्र

इस स्थान पर गुरुकुल की भांति ब्रह्मचारियों को रखने और पढ़ाने का प्रबन्ध है।

एक खास बात यह है जिसे हमारे गुरुकुलों (कांगड़ी वृंदावन) आदि को इस भगवद्भक्ति आश्रम नामी संस्था से सीख कर लाभ उठाना चाहिये अर्थात् यह प्रबन्ध है कि लड़के अपने पांव पर आप खड़े होने वाले बन जांय वे किसी के मुहताज न रहें, इस निमित्त ऐसी आदतें डलवाई जाती हैं कि वे अपना काम आपही करलें नौकरों कहारों और रसोइयों के मुहताज न बनें। अर्थात् सब लड़के मिलकर (बारी २ से) रसोई बना लेते हैं। वे अपने लिये पानी स्वयं भरते हैं; अपने बरतनों को आप ही साफ कर डालते हैं।

यद्यपि यह श्रीसनातनी महाशयों की संस्था है परन्तु ब्रह्मचारीगण चारों वर्णों के ले लिये गये हैं और वेद मन्त्र बतलाने से किसी शूद्र तक होने पर भी इन्कार नहीं है।

अगर आप आर्यसमाज के नेतागण) अपने गुरुकुलों को आदर्श बनाना चाहते हो तो रिवाड़ी जाकर उक्त संस्था की देख भाल कीजिये और विचारिये कि क्या वैसे नियमों पर ही आप लोग अपनी संस्थायें नहीं चला सकते ?

केवल रोटी मात्र बिना दाल शाक आदि खाने वाले लड़के यहां हृष्ट पुष्ट और अपने घरों से अच्छे आरोग्य देखे जा रहे हैं।

२५ अगस्त १९२६ सद्धर्म प्रचार

(ले० स्वामी मंगलानन्दजीपुरी)

विशालदेश के एक छोटे से स्थान में एक महात्मा की कृपा धीरे २ एक ऐसा केन्द्र स्थापित कर रही है जो समयान्तर में एक महाशक्तिशाली स्थान होगा। ... ...

कार्य दृढ़ता के साथ आगे बढ़ रहा है और कोई भी विचारशील सज्जन एक बार देखकर इस की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। ... ...

आश्रम में ४ पाठशालाएं हैं। ब्रह्मचर्य विभाग, साधारण पाठशाला और दलित पाठशाला तथा कन्या पाठशाला। ब्रह्मचारीगण उसी प्रकार सादगी से रहते हैं जैसा प्राचीन नियम है। वे सारे कार्य अपने हाथ से

करते हैं जिससे उन्हें परिश्रम की आदत रहे। इनको संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी और इतिहास भूगोलादि की शिक्षा दी जाती है। भजन गाना, लेख लिखना और व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है। अध्यापकादि केवल सहायता मात्र करते हैं बाकी सारा कार्य-प्रबन्ध इन्हीं ब्रह्मचारियों के हाथ में हैं। ... ...

दलित पाठशाला—एक आदर्श कार्य है। इस में समीपवर्त्ती ग्रामों के चर्मकार, धानक, भंगी आदि के बालकों को प्रेमपूर्वक शिक्षा दी जाती है। इनको साधारण शिक्षा के साथ ही प्रभुभक्ति और धर्म की शिक्षा भी दी जाती है। ... ...

कन्या पाठशाला के लिये एक सत्संगी ने ५ हजार की लागत की कोठी बनवादी है। इसमें कन्या देव नागरी और संस्कृत की शिक्षा पाती हैं अध्यापिका एक ब्रह्मचारिणी कन्या विदुषी है जिन्होंने व्याकरण सिद्धान्त तक पढ़ा हैं। ... ...

हिन्दु धर्म की बिखरी शक्ति को ग्रथित करने का कितना पुण्य कार्य यह आश्रम कर रहा है। देश में ऐसे आश्रमों की भारी जरूरत है।

रेवाड़ी के नजदीक रामपुरा एक जागीर है जिस के जागीरदार राव बहादुर कप्तान राव बलवीरसिंह जी मेम्बर लेजिसलेटिव कौंसिल पंजाब हैं। उन्होंने कई हजार बीघा जमीन आश्रम मजकूरबाला के वास्ते वक्फ करदी है और जहां हिन्दुओं के पुराने तरीके पर बानप्रस्थी लोग ब्रह्मचारियों की तालीम व तरबीय करते हैं और उनको पढाते लिखाते हैं..... कुश्ती भी सिखाई जाती है सब से ज्यादा अजीब व गरीब यह अमर था कि उन की खुराक निहायत सादा है जौ, गेहूं और चना की मिली हुई रोटी खाते हैं। जिस्मानी ताकत उनकी निहायत अच्छी थी । सब तन्दुरुस्त और निहायत चालाक व चुस्त नजर आते थे ।

अमली तरक्की इन बच्चों की निहायत उम्दा थी और आम तौर पर जिस कदर तरक्की मदरसों के बच्चे करते हुए मालूम होते हैं उस से कुछ ज्यादा थी। यकीन है कि जिस वक्त यहां के तालिबेल्म फारिगउल्तहसील हो कर दुनियाँ में आयेंगे तो अपनी कम जरूरयात की वजह से अपनी सादा जिन्दगी के बसर करने के बाइस कौम

और मुल्क का जेवर होंगे और अपने प्यारे मुल्क मादरे वतन की खिदमत निहायत खूबी और खुश असलूबी से कर सकेंगे और निहाय ही मुफीद और कारामद साबित होंगे।

एक खसूसीयत खास इस आश्रम की यह है कि यहां तुल्वा बिला लिहाज जात पात दाखिल किये जाते हैं और चमारों के लिये स्कूल भी कायम है कि गांव और शहर के चमारों के लड़के आकर दिन में पढते हैं और शाम को अपने घर चले जाते हैं।

२४ साल से नये गुरुकुलों का सिलसला जारी है मगर जो बात इस गुरुकुल में देखने में आई वह अनका है। हमें यकीन है कि दीगर गुरुकुल इस गुरुकुल का नमूना बनाकर इस की तकलीद करेंगे ताकि आइन्दा नसलें हिन्दुओं की इस तङ्गदिली से आजाद हों जिसमें हर एक हिन्दू आज कल फंसा हुआ नजर आता है और कौम व मुल्क में सच्चे और अच्छे रज़ाकारों की तादाद बढे जो कम से खर्च में मुल्की खिदमत के वास्ते तैयार हो सकें।

१० जनवरी १९२३

ले० बा० हरगोविन्द प्रसाद निगम

फतह दिल्ली

मैं गो रक्षा का प्रचार करता हुआ हरिद्वार पहुंचा वहां जाकर मैंने ऋषिकुलों को देखा, प्राचीन ऋषिकुलों और आज कल के जीवन में बहुत भिन्नता आगई है। उस समय मुझे भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रिवाड़ी) का दृश्य याद आ गया जहां पर कि हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली का एक सच्चा नमूना मेरी आंखों ने देखा था..... यह सार्वजनिक संस्था है परन्तु इसका आरम्भ आप ही ने (कप्तान, राव बहादुर राव बलवीरसिंह जीने) किया है। इसके लिये ७०० बीघा पृथ्वी आपने दान दी है इसमें से लगभग १०० बीघा भूमि में आश्रम बना हुआ है और शेष भूमि में गो माताएँ चरती हैं..... यह आश्रम बिलकुल प्राचीन ढँग पर है जैसा कि अनेक ग्रन्थों में प्राचीन ऋषि मुनियों के आश्रमों का वर्णन आता है। इस स्थान पर प्राचीन ऋषिकुलों की भांति ब्रह्मचारियों को रखने और पढाने का प्रबन्ध है .....इस आश्रम में ब्रह्मचारियों को प्राचीन प्रणाली के अनुसार शिक्षा दी जाती है। नंगे पांव और नंगे बदन केवल एक लंगोटी लगाये ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य व्रतका पालन करते हुए विद्याध्ययन करते हैं..... ब्रह्मचारियों की दिनचर्या इस प्रकार रक्खी गई है कि जिससे उनका जीवन भविष्य में स्वावलम्बी और एक तपस्वी जीवन बन सकता है। वे अपने हाथ से स्वयं

पानी भरते, बर्तन साफ करते तथा भोजन बनाते हैं। उनका भोजन भी बड़ा ही सादा और सात्विक भोजन होता है.....आश्रम को देख कर मेरा मन बहुत ही प्रसन्न हुआ। मेरी इच्छा है मैं ऋषिकुल व गुरुकुलों के मुख्याध्यापकों की सेवा में प्रार्थना और साथ ही अनुरोध करता हूं, कि वे भी उस आश्रम की भांति ब्रह्मचारियों का जीवन इसी प्रकार बनावें। उनको स्वावलम्बी बनाने की सबसे अधिक आवश्यकता है जिसका कि आज कल इन संस्थाओं में बहुत ही अभाव है।

१ जुलाई १९२३ सम्पादक

भारत गो हितैषी दिल्ली

जिस क़ौम का हर एक लड़का आश्रम में परवरिश पाता था, उस क़ौम के लिये आज आश्रम लफ़्ज़ माज़ी की कहावत होगया है, और आम तौरपर हमारे बच्चों के कानोंमें यह लफ़्ज़ भी नहीं पड़ता। मुलक में दोबारा जाग्रति होने से अब फिर आश्रम शब्द सुनाई देने लगा है, और मुलक में खासखास आश्रम नज़र भी आने लगे हैं, ...आजमैं नाज़रीन की सेवामें एक और आश्रमका

संदेशा पहुंचाता हूं जो अभी तक गुमनामी की हालत में है। उसका नाम भगवद्भक्ति आश्रम है। अगरचे यह अपनी अवायल उमर में है, लेकिन अगर हम इस को मुलक की मौजूदा हालत के लिहाज़ से आदर्श आश्रम कहें तो बेजा न होगा, मैंने इसको कितनी बार जाकर देखा है, ... इस आश्रम का एक असूल गौरक्षा करना और गौओं की नसल की तरक्की करना है, ... आश्रम के लिये सौ बीघा ज़मीन में पीपल, बड़, गूलर, नीम, आंवला इत्यादि मसनवी हवा दरखत लगाये गये हैं जिन से उपवन बन गया है,। बीच में एक बड़ा अच्छा तालाब है और आस पास ब्रह्मचारी वानप्रस्थी व संन्यासी महात्माओं के रहने के स्थान हैं। इसवक्त आश्रम में चार पाठशालायें हैं ब्रह्मचर्य आश्रम, साधारण पाठशाला, अछूत पाठशाला, कन्या पाठशाला।

ब्रह्मचर्य विभाग।

इस विभाग में इस वक्त २० ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन मर्यादा के मुताबिक तप की ज़िन्दगी बसर करते हैं। यह अपने पानी भरने, चौका बर्तन करने और भोजन बनाने का काम खुद करते हैं, इनके लिए एक भी नौकर नहीं है इस के इलावा आश्रम की ज़मीन को फावड़ों से दुरुस्त

करना ,सड़क बनाना, तालाब की मिट्टी खोदना, दरख्त लगाना, फूल बोना वगैरा आश्रम के सब काम बाक़ायदा रोज मर्राह करते हैं। इस से उनके जिस्म बताना रहते हैं और परोपकार करने का स्वभाव बना रहता है। छोटे से छोटा काम जैसे घास खोदना वगैरा; इस भाव से कराने की आदत डलवाई जाती है कि हर एक काम धर्म और उपकार की गरज़ से अहंकार से मबरा होकर करना सीखें। संस्कृत देवनागरी, तवारीख जुग्राफ़िया, अंगरेजी और उर्दू इनके कोर्स भी रखे गये हैं। हरएक विद्यार्थी को व्याख्यान देना और लेख भी लिखना सिखाया जाता है। इस विभाग में कुछ ऐसे आदमी भी हैं कि जिन का इरादा तमाम उमरधर्म के काम करने का है इनकी खुराक बहुत सादी है।

अछूत पाठशाला।

आश्रम का यह हिस्साभी ख़ास दिलचस्पी का बाइस है, गिर्दोनवाह से अछूत अक़वाम के लड़के पढ़ने आते हैं। उनको तालीम देने वाले विद्वान् त्यागी संन्यासी हैं जो उन को बहुत मेंहनत से पढ़ाते हैं। पहले सब लड़कों को निन्हाया जाता है फिर ईश्वर प्रार्थना के बाद उन को तालीम दी जाती है। उन को धर्म और भक्ति की शिक्षा

ज़ियादह मिलती है उन से छूने का कोई परहेज़ नहीं किया जाता, उनको महात्माओं के भजन,दोहा चौपाई और श्लोक ज़बानी याद कराये गये हैं, जब ये भक्ति भाव से भजन गाते हैं तो सुनने वालों को बहुत आनन्द आता है, कुछ लड़कों को संस्कृत पढ़ाई जाती है और गीता उनकी तालिम में रक्खी गई है।

कन्या पाठशाला।

अगरचे कन्यापाठशाला का काम अभी शुरु हालत में है लेकिन यह सब से ज़ादा क़ाबिल जिकर है, यहां पर लड़कियों को धर्मकी तालीम दी जाती है और ब्रह्मचारियों की तरह उन की ज़िन्दगी भी बड़ी सादी है इनसे भी हर एक काम कराया जाता है, गीता और रामायण उनके खास मताला की किताब हैं। साथ ही हिसाब भी पढाया जाता है। यह भी ब्रह्मचारियों की तरह फूल लगाने और मट्टी खोदने व डालने व रोटी बनाने का सब काम करती हैं। इनका इन्तज़ाम बहुत ही अच्छा है क्योंकि जिन असहाब की लड़कियां हैं उन में से कोई साहब खुद और लड़कियों में से किसी की माता खुद उनकी मुन्तज़िमा हैं। पठाने के लिये एक विद्वान् लड़की है ..... इसके इलावा आश्रममें एक गौ रखी गई हैं और उनके बछड़ों को दूध पिला

कर उस की नसल को तरक्की देने का खयाल है, गौओं की सेवा आश्रमवासी खुद करते हैं, तालीम याफ्त अश्रम वासी गौओंकी सेवाके लिये मुकर्रर हैं। वह खुद चारा डालते हैं खुद ही जंगल में चराते हैं खुद ही उन की जगह साफ करते हैं और रात को उन के पास सोते हैं। यहां पर असली गौसेवा का नज़ारा दिखाई देता है।

इस वक़त मेरा मक़सद सिर्फ इतना ही है कि हमारे देश में बहुत से नायाब हीरे हैं जो गुमनामी की कीचड़ में पड़े हुये हैं अगर जनता ज़रा ध्यान देकर अपनी वेश बहा अशिया की हिफ़ाज़त करने लग जाय तो वह दिन दूर नहीं जब यह प्राचीन देश दुनियां के दरबार में अपना पहला दरजा हासिल करेगा। उम्मेद है पुरानी संस्थाओं के विही ख़्वाह बहुत जल्द इस तरफ़ तवज्जाम बजूल करेंगे और बचश्मखुद इस दिलकश आश्रम को देखकर उसकी क़दर व एन्ज़लित करेंगे और वहां एक दो रोज़ रह कर देखेंगे कि इस वायु मण्डल में मन में शुद्धता, विचार में उच्चता आचार और व्यवहार में सरलता के भाव पैदा होते हैं।

१७ अक्तूबर सं० १९२३

ले० शिवनारायण सम्पादक तेज दिल्ली

े का खयाल है, गौओं
, तालीम याफ्त अश्रम
हैं। वह खुद चारा डालते
ही उन की जगह साफ
स सोते हैं। यहां पर
ई देता है।

इतना ही है कि हमारे
गुमनामी की कीचड़ में
देकर अपनी बेश बहा
य तो वह दिन दूर नहीं
के दरबार में अपना
द है पुरानी संस्थाओं
तअज्जाम बजूल करेंगे
म को देखकर उसकी
एक दो रोज़ रह कर
में शुद्धता, विचार में
सरलता के भाव पैदा

सम्पादक तेज दिल्ली

"भक्ति कार्यालय रेवाड़ी से

भक्ति मंगाया कीजिये ।

क्योंकि

१ यह भक्ति, ज्ञान, योग पूर्ण सचित्र मासिक पत्र है।

२-इसके आरम्भ में सर्वदा भगवत् स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना के अर्थ सहित मन्त्र तथा श्लोक रहते हैं।

३-इसमें बड़े २ महात्माओं, भक्तों तथा विद्वानों के लेख और आधुनिक कवियों की सरल भाव पूर्ण कवितायें रहती हैं।

४ इसके अन्त में प्राचीन महात्माओं के गम्भीर भाव पूर्ण गाने योग्य भजन रहते हैं।

५-इसके पढ़ने से आप को सत्संग तथा भक्ति का लाभ होगा।

६-वर्ष में एक बार सुन्दर लेखों तथा कई एक मनोहर तिरंगे और इकरंगे चित्रों से विभूषित बृहदाकारका विशेषांक निकलता है जो कि स्थाई ग्राहकों को बिना मूल्य ही मिल जाता है।

७-इस में रंगीन कवर के अतिरिक्त प्रति मास एक तिरंगा मनोहर चित्र रहता है।

८-इतना सब कुछ होने पर भी इसका वार्षिक चन्दा केवल २) मात्र है इसलिये आज ही पत्र लिख कर इसके स्थाई ग्राहक हो जाइये।

सम्पादकः—

भक्ति प्रेस में मिलने वाली पुस्तकें।

१.	भगवत्गीता संस्कृत तथा भाषा टीका सहित मूल्य		॥=)
२.	भगवत्गीता दशमाध्याय पर्यन्त	...	।=)
३.	वेदोपनिषत्	... ...	।=)
४.	अष्टोत्तरशतमन्त्रमाला	... ...	=)।
५.	ज्ञानधर्मोपदेश	... ...	=)।।।
६.	भक्ति ज्ञान योग संग्रह	... ...	=)।।
७.	सत्य शब्द संग्रह	... ...	।=)
८.	शब्दसंग्रह	... ...	=)।।
९.	सारसंग्रह	... ...	=)
१०.	भाषा फक्किका प्रकाश	... ...	।)
११.	भगवद्भक्तांक	... ...	॥=)
१२.	भगवदंक	... ...	॥)

नोटः-एक रुपये से कम मूल्य की पुस्तक मंगाने वालों को डाक महसूल सहित टिकट भेजने चाहिये।

मिलने का पताः—

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम, रेवाड़ी।